ISSN 2815-8326

हिंदी त्रैमासिक

पहचान

देश से हम, हमसे देश

वर्ष 1, अंक 4, अप्रैल - जून 2023, पृष्ठ संख्या 32

ग़ज़ल विशेषांक

आवरण चित्र : अश्विनी त्यागी

BEST
CONSTRUCTION
BETTER
HOME

ArchPoint Ltd

ARCHPOINT LTD

You Dream, We make the Dreams True!

Our Best Services:

- PROVIDING END-TO-END RESOURCE CONSENT, EPA AND BUILDING CONSENT SERVICES
- FEASIBILITY STUDIES - PRE & POST PURCHASE OF YOUR PROPERTY
- ARCHITECTURAL DESIGNING
- PLANNING & PROJECT MANAGEMENT
- SURVEYING
- GEOTECHNICAL INVESTIGATIONS & REPORTS
- CIVIL ENGINEERING FOR INFRASTRUCTURE DESIGNING
- STRUCTURAL ENGINEERING

engineering new zealand
LICENSED BUILDING PRACTITIONER BUILDING CONFIDENCE
PMI NEW ZEALAND CHAPTER
ADNZ Professional Member

64 21848 552 archpoint.co.nz

GODWIN-AUSTEN

GODWIN-AUSTEN

You Wish, We bring the wishes to Reality!

Our Best Services:

- Subdivisions & Building Construction on Turn Key Basis
- Land and Home Packages
- Design & Build
- 10 Years Master Builder Guarantee
- Auckland Wide Operations

MASTER BUILDERS
PMI NEW ZEALAND CHAPTER

64 21889 918 OR 64 21848 552 godwinausten.co.nz

हिंदी त्रैमासिक
पहचान
देश से हम, हमसे देश

संस्थापक/ प्रधान संपादक
प्रीता व्यास

सलाहकार संपादक
रोहित कृष्ण नंदन

सहयोगी संपादक
वंदना अवस्थी दुबे
माला चौहान

ले आउट/ ग्राफिक्स
Design n Print, India

कवर पेज
अश्विनी त्यागी

प्रकाशक
पहचान
आकलैंड, न्यूज़ीलैंड
editor@pehachaan.com

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं, उनसे प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं. रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है. कुछ चित्र और लेखों में प्रयुक्त कुछ आंकड़े इंटरनेट वेबसाइट से संकलित किये गए हो सकते हैं.

धरती के अलग अलग हिस्सों पर एक ही समय में अलग-अलग ऋतुएं राज कर रही होती हैं. किसी हिस्से में अप्रैल-मई जून का अर्थ है सर्दियों की शुरूआत वाला, यानि हवाओं में ठंड की हलकी खुनक वाला मौसम तो किसी और हिस्से में इसका अर्थ है भरपूर गर्मी, पसीना, लू-लपटों, घमौरियों और पानी की किल्लत वाला मौसम.

मौसम कोई भी हो अब हर जगह ये साफ़ महसूस होने लगा है कि हमारे पर्यावरण के प्रति लापरवाह रवैये की वजह से प्रकृति अब नितांत अकल्पनीय स्वरूप में सामने आती है. कहीं अचानक बाढ़ की स्थिति बन जाती है, कहीं सूखा पड़ जाता है, कहीं पारा इतना ऊंचा चला जाता है कि लोग त्राहि-त्राहि कर उठते हैं. अगर हम अब भी सचेत नहीं हैं तो फिर अपना दुर्भाग्य ही न्यौत रहे हैं.

आप जहां भी हैं, जिस भी मौसम को जी रहे हैं, हमारी कामना है कि वह मौसम आपके लिए सुखद हो. पर्यावरण का घ्यान रखना बहुत आवश्यक है. इस ओर अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से लें और बच्चों को भी हर छोटी से छोटी बात का ध्यान रखना सिखाएं, चाहे वह पानी को बर्बाद ना करना हो चाहे ऑर्गेनिक इनऑर्गेनिक कचरे के डिस्पोज़ल की बात हो, चाहे पेड़-पौधों के रख-रखाव की बात हो.

'पहचान' ने अप्रैल जून 2023 के इस अंक के साथ साल के सभी मौसमों का दौरा पूर्ण कर लिया है यानि अपना पहला वर्ष पूर्ण कर लिया है. आप सबके साथ, सहयोग और स्नेह का ये प्रमाण है. आभारी हूं और ये विश्वास संजोये हूं कि इसी तरह साथ बना रहेगा.

ये अंक ग़ज़ल विशेषांक के तौर पर आपके सामने हैं. संभवत: प्रयास आपको रुचिकर लगेगा. आपकी प्रतिक्रियाएं ना सिर्फ उत्साह बढ़ाती हैं बल्कि कई बार मार्गदर्शन भी करती हैं. जुड़िये और जुड़े रहिये

प्रीता व्यास
प्रधान संपादक

इस अंक में...

पाठकीय प्रतिक्रियाएं		5
आलेख		
नाम में क्या रक्खा है	सलिल वर्मा	7-8
लघु कथा		
बदलाव / विवशता	राजेंद्र परदेसी	9
व्यंग्य		
वरिष्ठ जनों का राशिफल	अलकनंदा साने	10
धरोहर		
राजा परीक्षत की बावड़ी दतिया	कुमार रूपेश	11
ग़ज़ल		
हिंदी भाषा में ग़ज़ल	के.पी. अनमोल	12
ब्रज भाषा में ग़ज़ल	नवीन सी. चतुर्वेदी	13
डोगरी भाषा में ग़ज़ल	सुरजीत होश बड़साली	14
बुंदेली भाषा में ग़ज़ल	महेश कटारे सुगम	15
पंजाबी भाषा में ग़ज़ल	रश्मि शर्मा	16
हिमाचली (कांगड़ी) भाषा में ग़ज़ल	द्विजेन्द्र द्विज	17
गुजरती भाषा में ग़ज़ल	प्रताप सिंह डाभी 'हाकल'	18
हिंदी भाषा में ग़ज़ल	डॉ. सतीश सत्यार्थ	19
भोजपुरी भाषा में ग़ज़ल	इरशाद ख़ान सिकंदर	20
मराठी भाषा में ग़ज़ल	सुरेश भट (अनुवाद : प्रशांत बेलवलकर)	21
हिंदी भाषा में ग़ज़ल	नरेश शांडिल्य	22
विदेशों में ग़ज़ल	'दीवाना रायकोटी' सोम नाथ गुप्ता (न्यूज़ीलैंड से)	23
विदेशों में ग़ज़ल	डा. भावना कुंअर (ऑस्ट्रेलिया से)	24
विदेशों में ग़ज़ल	जसबीर कालरवि (अमेरिका से)	25
विदेशों में ग़ज़ल	प्रगीत कुंअर (ऑस्ट्रेलिया से)	26
विदेशों में ग़ज़ल	श्रद्धा जैन (सिंगापुर से)	27
लोक संस्कृति		
फूल देई, छम्मा देई	डॉ. भूपेंद्र बिष्ट	28
बाल साहित्य		
अप्रैल फूल यानी मूर्ख दिवस	प्रियदर्शी	29
पुस्तक समीक्षा		
इंसानी लापरवाहियों का खुला बयान है 'उदास नदियों का दर्द'	प्रीता व्यास	30
चित्र चयन		
इस तिमाही का चित्र	जयप्रकाश मानस	32

पाठकीय प्रतिक्रियाएं

बुंदेलखंड बहुत बड़ा है जिसमें मध्य प्रदेश के सागर, दमोह, पन्ना, टीकमगढ़ और छतरपुर भी आते हैं. पहले विंध्याचल के आर पार रहने वाले बिंधेली कहलाते थे जो बुंदेली हो गए और क्षेत्र हो गया बुंदेलखंड. 'बुंदेलखंड की बुड़की' अच्छा लेख है. साधुवाद विनीता गुप्ता जी.

प्रभु दयाल
भारत.

अति उत्तम सृजन सामग्री. हार्दिक बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं.

सुशील सरना
भारत.

शरद कोकास जी का लेख 'इस बार वान में क्या देंगे' पढ़ते हुए बहुत सी पुरानी यादें ताज़ा हो गईं. माँ भी हल्दी कुमकुम घर पर किया करती थीं और वान में तो सादा सा कुछ भी दे दिया जाता था, कभी चाय की छन्नी तो कभी रुमाल. पत्रिका बहुत अच्छी है. वाकई अपने संस्कारों से जोड़ती है. धन्यवाद आपका.

सोनाली कलगांवकर
डालास.

अपनी समग्रता में पत्रिका पाठकों को बांधती है. इतनी विविधता समेटने के लिए साधुवाद.

जयंती शिवराम
न्यूज़ीलैंड.

रोहित कुमार हैप्पी जी की लघु कथा 'आदमी कहीं का' और 'परिणाम' बहुत पसंद आई. 'आदमी कहीं का' में बहुत बढ़िया व्यंग्य है. साधुवाद.

ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान'
भारत.

'गढ़ कुंडार का किला' जानकारी अच्छी लगी. मेरी रूचि ऐतिहासिक स्थलों में हैं अगर इसी तरह के लेख और हों तो मैं कुमार रूपेश जी को और पढ़ना चाहूंगा. हमारे देश की ये विशेषता है कि इसकी प्राचीन इमारतें, उनका स्थापत्य बहुत सुन्दर और आश्चर्यचकित करने वाला तो है ही साथ ही आपको हर शहर, गांव में कुछ न कुछ अनमोल मिल ही जाएगा. मैं पिछले ग्यारह साल से आस्ट्रेलिया में हूं लेकिन मूलत: गुजरात का हूं, उम्मीद है आपकी पत्रिका में हमारे गुजरात के ऐतिहासिक स्थल भी आगे कभी शामिल होंगे.

जपन दलाल
आस्ट्रेलिया.

हिंदी की वेब पत्रिकाएं तो अनेक हैं लेकिन अपने प्रभावी कंटेंट से 'पहचान' अपनी अलग पहचान बना रही है. यात्रा जारी रहे. शुभकामनाएं.

अनिकेत जोशी
यूज़ीलैंड

SELLING

BUYING

OR

"Making your REALTY dreams a REALITY"

PROVIDING PREMIUM SERVICE IN REAL ESTATE

Dharmendra Gomber

Mobile: 0212318123

DDI: 2155767

Neeta Gomber

Mobile: 0211001256

Email: d.gomber@barfoot.co.nz

BARFOOT & THOMPSON

LICENSED REAA 2008

BLOCKHOUSE BAY

(09) 627 8325

नाम में क्या रक्खा है

सलिल वर्मा

पुराने ज़माने में बच्चों के नाम भगवान के नाम पर रखे जाते थे, जैसे राम, किशन, विष्णु, शम्भू आदि. कारण पूछने पर किसी बुज़ुर्ग ने बताया कि जीवन के अंतिम समय में मनुष्य की ज़ुबान पर भगवान का नाम बहुत मुश्किल से आता है. साथ ही, संतान के प्रति मोह भी उतनी ही मुश्किल से छूटता है. ऐसे में अंतकाल में जब वह व्यक्ति मोहवश अपनी संतान को नाम लेकर पुकारेगा तो कम से कम इसी बहाने भगवान का नाम उसके मुख से निकलेगा और जीवन भर यही सुना है कि अंत समय में ईश्वर का नाम मात्र लेने से प्राणी समस्त पापों से मुक्त होकर सीधा बैकुंठ लोक को जाता है.

समय बदला और जीभ उमेठकर अंग्रेज़ी बोलने वाला व्यक्ति और 'सॉरी, आय ऐम नॉट कम्फॉर्टेबल इन हिंदी', बोलने वाले लोग भी अपनी बोलचाल की अंग्रेज़ी से कठिन हिंदी नाम अपने बच्चों का रखने लगे. कुछ नमूने-उत्प्रेक्षा, यवनिका, अनुष्टुप, श्रीज्या आदि. हमारे एक परिचित बौद्ध सहित्य के प्रकांड विद्वान थे. उन्होंने अपने सभी बच्चों के नाम बौद्ध भिक्षुओं के नाम पर रखे थे -अशोक प्रियदर्शी, कुमार शांतरक्षित, कुमार आर्यदेव. शांतरक्षित का नाम उसके स्कूल मास्टर हमेशा भूल जाते थे और वे उसे प्राय:

मकरध्वज बुलाते थे. अब यह नाम कैसे उनकी ज़ुबान पर चढ़ गया था, भगवान जाने. ये नाम की महिमा भी अजीब है.

अब मेरे नाम को ही ले लीजिये. मेरे घर का नाम है 'पापू', पप्पू नहीं. एक गाना, 'पप्पू कांट डांस साला' के अनुसार मुझे डांस तो नहीं आता लेकिन फिर भी मैं पप्पू बिल्कुल नहीं हूं. हुआ यूं कि मेरे स्वर्गीय पिता जी इंदिरा जी के बहुत बड़े प्रशंसक थे. पंडित नेहरू, इंदिरा जी को पत्र लिखते तो उसमें 'तुम्हारा पापा' की जगह कई बार प्यार से 'तुम्हारा पापू' लिख दिया करते थे. बस मेरे पिता जी के मन में पापू बैठ गया और उन्होंने अपने ज्येष्ठ सुपुत्र को अर्थात मुझे पापू कहकर बुलाना आरंभ कर दिया. इससे दो बातें हुईं एक तो मैं पप्पू बनने से बच गया और पिता जी खुश कि 'इट्स डिफरेंट'.

मैं तो शहर में पैदा हुआ बच्चा था, जबकि गांवों में नाम रखने की एक अलग ही परंपरा थी. एतवारू, सोमारू, मंगरू जैसे नाम उन दिनों के हिसाब से जिस दिन वे पैदा हुये हों यानि इतवार, सोमवार, मंगलवार. एक गांव में अपनी नौकरी के दौरान एक व्यक्ति से संपर्क हुआ, जिसके दो पुत्र थे. पहला 1975 में पैदा हुआ और दूसरा 1977 में. बड़े बेटे के समय देश में कांग्रेस की सरकार थी सो बेटे का नाम कांग्रेस प्रसाद और छोटे के समय जनता पार्टी की सरकार सो उसका नामकरण हुआ जनता प्रसाद.

अब जब नामों का सिलसिला चल ही पड़ा है तो नामों का रुख़ मोड़ते हैं पंजाब की तरफ़, जहां नाम होते हैं करनैल सिंह, जरनैल सिंह, कलक्टर सिंह और बिहार में वकील चौधरी, बलिस्टर चौधरी. इन नामों के पीछे छिपा है एक पूरा समाजशास्त्र.

सुंदर नामों को प्रेम से और भी सुंदर बना देना भी शायद समाज की एक स्नेहमयी भावना का परिचायक है. देवदास की पार्वती को प्यार से पारो कहा जाना, नर्मदा को नारो, या सच्चिदानंद को साचो और फूलवती को फूलो. यही नहीं आधुनिक समय में बिपासा को बिप्स और ऐश्वर्या को ऐश, अक्षय को अक्की और संजय को संजू पुकारना भी उसी प्रेम की कड़ी है.

अब चर्चा उन नामों की, जिन्हें सुनकर मन में टीस उठती है, एक बेचैनी होती है कि ऐसे कौन से मां बाप होंगे जो अपने बच्चों के ऐसे नाम रखते होंगे? हर मां बाप यही चाहते हैं कि उसके बच्चे का नाम दुनिया का सबसे अनोखा और सुंदर नाम हो, उनकी संतान के जैसा. लेकिन कौन सी मजबूरी उनसे उनके बच्चों के नाम रखवाती है खदेरन (भगाया हुआ), घूरन (घूरे पर फेंका हुआ), बेचन (बेचा हुआ).

जब मैंने यही प्रश्न अपनी एक बुज़ुर्ग बुआ से पूछा तो वो हंसीं नहीं, भावुक होकर कहने लगीं. हमारे समाज में बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्हें कोई बच्चा नहीं हुआ, हुआ तो बहुत देर से हुआ, देर से भी हुआ तो चार-पांच साल का होकर काल के गाल में समा गया. समाज विकास की लाख सीढ़ियां चढ़कर भी ऐसे लोगों को एक उपेक्षा की नज़र से देखता है. ऐसे मां बाप काल को धोखा देने के लिये यही साबित करना चाहते हैं कि ये बच्चा उनका सगा नहीं है. वे अपने बच्चे को जन्म के साथ घर से निकाल देते हैं (तो वह खदेरन हो जाता है), घूरे पर डाल आते हैं (तो वह घूरन हो गया). इसके बाद घर की दूसरी महिला उस बच्चे को उठाकर ले आती है और बच्चा अपनी मां की गोद में 'अनजान' बच्चे की तरह पल जाता है. यही नहीं अपने बच्चे को किसी रिश्तेदार के हाथों बेच दिया जाता है (ऐसे बच्चे को बेचन कहते हैं) और उस पैसे की मिठाई खा ली जाती है, फिर पराया मानकर कलेजे से लगा लिया जाता है. काल को धोखा देने से बच्चे लंबी उम्र को प्राप्त हुये, ऐसा देखा गया.

अब शेक्सपियर भले कह लें कि नाम में क्या रखा है, लेकिन धन्य है यह भारत भूमि जहां की मां अपने बच्चे को काल से बचाने के लिये कूड़े पर फेंक आती है या सवा रुपये में बेच देती है, केवल इस स्वार्थ के लिये कि उनके दुर्भाग्य की कोई भी छाया उनके फूल से बच्चे पर न पड़े. ■

1

बदलाव

राजेंद्र परदेसी

कल तक बेटे को, मां को घर का काम करते देख पीड़ा होती थी. सलाह भी देता कि तुम अधिक काम न किया करो, पर अब उसके विचारो में परिवर्तन आ गया था, क्योंकि कल तक वह मां का बेटा ही था, अब पत्नी वाला भी हो गया है इसीलिए पत्नी की पक्षधरता करते हुए बोला 'मां, तुम आजकल लेटी क्यों रहती हो ? तबियत तो ठीक है न ?'

'बेटा, उम्र अधिक हो गयी है, काम करने से थक जाती हूं, बहू आ गयी है तो थोड़ा आराम भी कर लेती हूं.

मां, अपनी बात को पूरा कर भी नहीं पायी थी कि बेटा बीच में ही बोल पड़ा 'लेकिन मां, सुकन्या से काम न कराया करो. अपने पिता के घर में उसने कभी कोई काम नहीं किया. यहां करेगी तो उसकी तबियत ख़राब हो सकती है.

'बहू ने तो कभी ऐसा कहा नहीं बल्कि वह स्वयं ही मुझे आराम करने की सलाह देती है.'

'उसके कहने से क्या होता है तुम्हें खुद सोचना चाहिए.'

बेटे की बातो को सुनकर मां को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसका अपना बेटा यह बात बोल रहा है, पर सामने तो बेटा ही खड़ा था.

2

विवशता

वह खाना खाकर सोने के लिए लेट गया लेकिन नींद आ नहीं रही थी उसे. उसकी आंखें बांस की मुंडेर देख रहीं थीं और मन, वह तो पता नहीं कहां था. तभी तो परबतिया कब आयी उसे पता भी न चला. कमरे का दिया भी परबतिया के साथ आयी हवा से बुझ गया था. अंधेरे में पता नहीं चल रहा था कि वह जग रहा है या सो रहा है. अत: टोह लेने के लिए वह बोली 'सो गए क्या ?'

'नहीं तो, ऐसे ही लेटा हूं.' बिना हरकत किये वह बोला.

परबतिया को तो बात बढ़ानी थी इसीलिए फिर बोली 'क्या सोच रहे हो ?'

'कुछ तो नहीं'.

'फिर बोलते क्यों नहीं ?'

'क्या बोलूं ?'

'सुबह चले जाओगे क्या ?'

वह कुछ देर तक सोचता रहा फिर बोला 'हां, छुट्टी कल ही तक तो है, परसों ड्यूटी करनी है.'

सुबह के बिछोह की कल्पना की नागिन ने डस लिया. परबतिया के मुख से निकला 'कुछ दिन और रुक क्यों नहीं जाते ?'

पीड़ा उसे भी साल रही थी लेकिन करे क्या पेट जो बीच में आ जाता है. फिर भी दुखी मन से कहाकैसे रुकूं, छुट्टी भी बाकी नहीं है, रुक जाऊंगा तो पैसा कट जायेगा, फिर यहां दिक्कत हो जाएगी, वैसे जैसा तुम कहो.'

'मैं क्या बताऊं ? तुम तो खुद समझदार हो. परसों चंदर आया था, कह रहा था कि तिवारी के यहां से जमीन छुड़ा लो, वह बटाई पर जोतने को तैयार है.'

फिर अपनी सलाह देते हुए कहा 'अच्छा भी रहेगा चार छह क्विंटल अनाज तो साल में घर आ जायेगा, अभी तो यही देखना पड़ता है कि कब तुम्हारे पास से पैसा आये कि घर में दाना आये.'

'इसीलिए तो जा रहा हूं कि तुम लोगो को तकलीफ न हो.'

फिर दोनों विवशता की चादर में सिकुड़ सिमट गए. ■

वरिष्ठ जनों का राशिफल

अलकनंदा साने

हम वरिष्ठ जनों को बहुत सारी जगह उपेक्षा का सामना करना पड़ता है. हमारे दृष्टिकोण से कहीं कोई सुविधा नहीं होती. हमारा उल्लेख नहीं होता. ये सब बहुत सामान्य है.

हम भी बहुत सी चीजों से स्वयं ही अलग-थलग हो जाते हैं. असुविधा के आदी हो जाते हैं, लेकिन दैनिक/साप्ताहिक राशिफल में भी हमारा ध्यान नहीं रखा जाता, इसका दुख होता है. बाकी कुछ हो न हो भविष्य तो हमारा भी होता ही है.

दाम्पत्य में प्रेम बढ़ेगा, नौकरी में अनुकूल वातावरण रहेगा, आय में बढ़ोतरी होगी, पीली वस्तु का दान कीजिए जैसी बातें हमारे किसी काम की नहीं होतीं.

हमारे लिये तो यह होना चाहिये कि इस सप्ताह पेट की तकलीफ़ कम हो जायेगी. आप हल्का अनुभव करेंगे. घुटनों का दर्द बढ़ सकता है. बारिश चल रही है, तले हुये भोजन से मोह नहीं पालें. फल, सब्जी का अधिक सेवन करें. रात को हल्का खायें. हो सके तो हल्दी या घी डालकर गर्म दूध पिये. इस हफ्ते से सुबह घूमने जाने की फिर से शुरूआत करें. प्राणायाम योगासन करते रहें.

किसी दिन दोपहर की नींद के बाद कपड़ों की अलमारी साफ कर पुराने कपड़े दान करें. नये कपड़ों का लाभ होगा. अपने बच्चों के खाते में थोड़ी बहुत राशि जमा करने की आदत बनाये रखें. सुख शांति मिलेगी. फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे हरेक माध्यम पर घुसपैठ न करें, एकाध काफी है. अध्ययन, पठन-पाठन में मन लगायें. मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. ■

राजा परीक्षत की बावड़ी दतिया

कुमार रूपेश

दतिया के बुंदेला राजाओं ने जल स्त्रोतों की व्यवस्था करने के उद्देश्य से अनेक कुंवे बावड़ियों का निर्माण कराया था. राजा परीक्षत की बावड़ी उनमें से एक है. मध्य प्रदेश के दतिया के जिला अस्पताल परिसर के अंदर राजा परीक्षत के समय की एक विशाल बावड़ी है. 50 फुट व्यास वाली इस बावडी का निर्माण संवत 1865 सन 1807 ई. में रानी हीरा कुंअर ने करवाया था.

इसमें लगे हुए शिलालेख में जानकारी इस प्रकार अंकित है :

छप्पय तादल प्रवल हरो सदा दतिया पति सामंत।।
इस वंस अवतंस भूप पारीक्षत राजत।।
तिहि वाम अंग अवतरि रमा पटरानी हीरा कुंवरि।।
गुन शील शोभा सदन जिहि समान कहियन अवर।।
दोहा सासन सिर धरि, नृप की महारानी अभिराम।
बनबाई यह बावड़ी, वाग सुधा के धाम।।
संवत दस और आठ सौ, आगे पैंसठ लेख।
कार्तिक शुक्ला द्वादसी, सोमवार सुभ रेष ।।

इसके चारों ओर दालान बनी हुई है. ये दालान तीन मंजिला है. प्रत्येक मंज़िल में आगे-पीछे दो दल है. यह अष्टकोणीय बावड़ी है जिसकी प्रत्येक भुजा की दालान में मेहराबदार तीन दरवाजे आगे और तीन दरवाजे पीछे हैं.

ईंट, पत्थर और चूने से बनी इस बावड़ी में अथाह जल भरा हुआ है. दालानों में आगे की ओर पत्थर निर्मित हाथियों की मूर्तियां हैं जो बावड़ी की ओर सूंड किये हुए हैं. इस बावड़ी में चित्रकारी भी की गई है.

वास्तु कला और चित्र कला की दृष्टि से यह बावड़ी महत्वपूर्ण है और जल की दृष्टि से लोकोपयोगी भी. ■

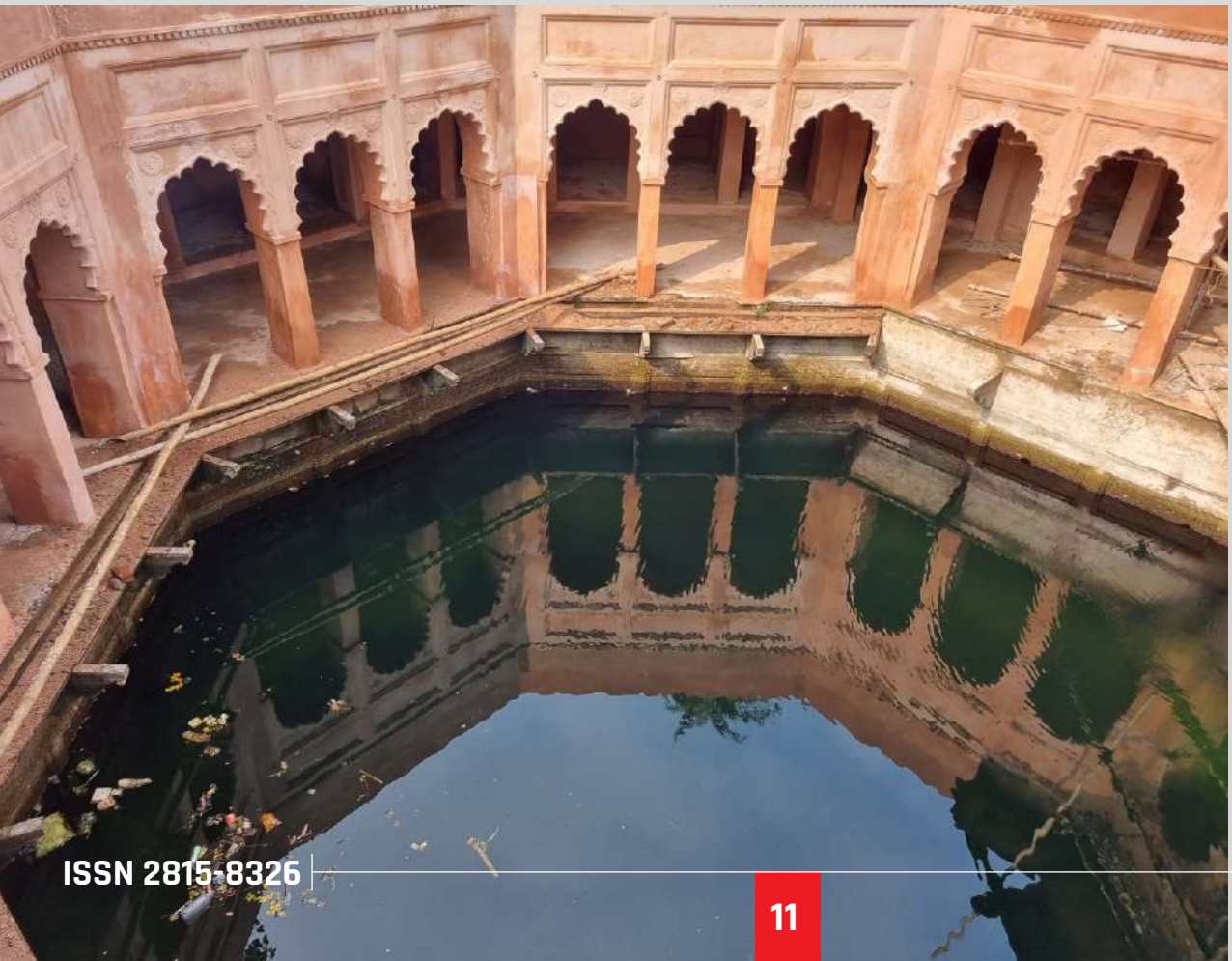

के.पी. अनमोल

हिंदी भाषा में ग़ज़ल

1.
एकदूसरे के साथ रहे हैं, वही हैं हम.
एकदूसरे के साथ रहे थे, तभी हैं हम.
एकदूसरे के दर्द में रोये हैं टूटकर,
एकदूसरे की आंख से बहती ख़ुशी हैं हम.
घुलमिल गये हैं कितनी जगह पर, कहां कहां,
कितने ही पानियों से बनी इक नदी हैं हम.
सदियों से एक दूसरे की जान हैं रहे,
इंसानियत को जोड़ने वाली कड़ी हैं हम.
कुछ साथ, साथ रहके ही होते हैं ख़ूबतर,
'तू' और 'मैं' हैं साथ तभी तो अभी हैं 'हम'.
नफ़रत का काम तोड़ना है, बांटना है बस,
जब तक हैं इससे दूर तभी तक सही हैं हम.
ये देखिए दिलों में कहां तक उतर सके
'अनमोल' ये न देखिए कितने बली हैं हम.

2.
कुछ लोग हमने रक्खे हैं मन के बहुत क़रीब.
पानी नदी के रहता है जैसे बहुत क़रीब.
हर कोई उसके वास्ते रखता है एक चाह,
आकर बग़ल में बैठे व बैठे बहुत क़रीब.
उस आदमी में ऐसा भला क्या है, उससे क्यों
झूठे तो दूर रहते हैं, सच्चे बहुत क़रीब.
जादू है इश्क़ इसमें वो अपनासा एक ख़ास,
देखे से दूर रहता है, सोचे बहुत क़रीब.
ये क़ायनात है कोई बिखरी हुई पज़ल
जोड़े तो मुझको जोड़े वो उसके बहुत क़रीब.
उसकी रगों में आग का दरिया है इन दिनों,
जाने को कह रहा है वो जल के बहुत क़रीब.
मैं चाहता रहा हूँ कि 'अनमोल' हर ख़ुशी,
सबके क़रीब हो मगर उसके बहुत क़रीब.

3.
मन के खेतों में बाड़ बैठेगी,
तो बहुत कुछ बिगाड़ बैठेगी.
चाह पहले दिखाएगी सपने,
और फिर पल्ला झाड़ बैठेगी.
दर्द, आहें, उदासियां, क़िस्से,
याद क्या क्या उखाड़ बैठेगी.
जो थकावट है दिन के चेहरे पर,
सांझ का मन बिगाड़ बैठेगी.
दुख में इक और दुख है बेटे का,
मां ने देखा तो ताड़ बैठेगी.
वह जो खाकर पछाड़ बैठी है,
लग रहा था पछाड़ बैठेगी.
क्या भरोसा है धूप का 'अनमोल',
जाने कब किसकी आड़ बैठेगी.

4.
बहुत मुश्किल समय में तो सहारे भी नहीं टिकते,
अगर हो सामने पत्थर तो आरे भी नहीं टिकते.
हमें तो लग रहा था सिर्फ डरते हैं हमीं लेकिन,
दुखों के सामने तो पग तुम्हारे भी नहीं टिकते.
किनारे रोककर रखते हैं पानी को हमेशा पर,
अगर हो वेग ज़्यादा तो किनारे भी नहीं टिकते.
है नभ के पास ऐसी कौनसी चुम्बक कि धरती पर,
ज़रासी फूंक मिलते ही गुबारे भी नहीं टिकते.
अगर इक सच निकल आया तो सारे झूठ भागेंगे,
अजी सूरज के आगे सौ सितारे भी नहीं टिकते.
कभी भारी पड़ा करते हैं बंदूकों पे कुछ नारे,
कभी लाठी निकल आये तो नारे भी नहीं टिकते.
तुम्हारे साथ तो 'अनमोल' वीराने सुहाते हैं,
तुम्हारे बिन इन आंखों में नज़ारे भी नहीं टिकते. ■

नवीन सी. चतुर्वेदी

ब्रज भाषा में ग़ज़ल

1.
जन्म सों मृत्यु तक झमेले हैं.
कृष्ण नें कम कलेश झेले हैं.
एक होवै स्वरूप तौ बरनें,
कृष्ण तौ नितनयेनवेले हैं.
नेंकु सी घाम सह न पामें हम,
कृष्ण दावानलन सों खेले हैं.
मधुपुरी में जो बच गये पापड़,
जाय कें सिन्धुमध्य बेले हैं.
मित्र के पग पखारे अंसुअन सों,
ऐसे तौ कृष्ण ही अकेले हैं.
कर्म सों कृष्ण प्रीत के अवतार,
युद्ध में भाग्य नें ढकेले हैं.

2.
भूलि कें हू भ्रमित न होनों है.
बीज तौ प्रेम ही कौ बोनों है.
भोलेभगवान आप जानत हौ,
भार नंदी कों ही तौ ढोनों है.
क्यों न केवट अभी उठावै लाभ,
राम कों गंगपार होनों है.
और सब कछ भलें ही छिन जावै,
आप कौ संग नांय खोनों है.
मात्र हम ही नहीं फरेबी हैं,
दाग यै तौ तुम्हें हु धोनों है.
सूई घनश्याम, आतमा है तार,
मात्र सूई में तार पोनों है.
रस असल तत्व है मेरे प्यारे,
रस बिना सब सपन सलोनों है.

3.
वीरता की भलें बड़ाई है.
कीरती धैर्य नें कमाई है.
बल अपर्याप्त है चुकौ साबित,
प्रेम के हाथ शक्ति आई है.
बुस नहीं जाय कल कहूं देखौ,
पास अतिरिक्त जो मलाई है.
माल मिष्ठान्न, ज्ञान के भंडार,
बांट दैवे ही में भलाई है.
उड़ने चैंयें जहाज सबही के,
सबनें मिलि कें हवा बनाई है.
सत्य स्वीकार कर लियौ लेकिन,
संग दुविधा हू हाथ आई है.
याहि तौ उड़नों है हवा के संग,
पेट में बात कब समाई है.
का बतामें हुनर की वौ कीमत,
गांठ सों हमनें जो चुकाई है.
हम भलें और कछ न कर पाये,
एक तस्वीर तौ बनाई है.
न्यूज पिरचार तौ करैगी खूब,
बादबाकी तौ जगहंसाई है.

4.
शुष्क अंखियान में जो पानी है.
यै ही नटराज की निशानी है.
दक्ष जैसेन संग रहनों है,
और कथा राम की सुनानी है.
आदि में आस अन्त में संतोष,
मध्य विषपान की कहानी है.
हमनें कल हू बितायौ हंस हंस कें,
आज हू हंस कें मात खानी है.
प्रीत की रीत हम न छोडिंगे,
यै बिमारी तौ खानदानी है.

सुरजीत होश बड़साली

डोगरी भाषा में ग़ज़ल

1.
चाननी झीला जिसलै तेरी न्हौंदी खुश्बू.
हर तारे दे जिस्मै उप्परा चौंदी खुश्बू.
ओ आई परतोई जंदा बेशक, तां बी
मेरे उप्पर क्या चिर ओह्दी रौंह्दी खुश्बू.
बचपन चेता आया, आई एक्क झलूकी,
छूई लंघी तनमन एक्क मनभौंदी खुश्बू.
खबरै कोन्नै घोटी सीने लाएआ होना,
तेरे उप्परा होर कुसै दी औंदी खुश्बू.
रंग तरसदे रेही जंदे न पागल पिच्छें,
रुख दिक्खी ब्हाऊ दा उडरी पौंदी खुश्बू.
दुधमूंहा बच्चा बेफिकरा सौंदा जिसलै,
ईयां जीयां घोड़े बेची सौंदी खुश्बू.
%होश% तू भौंरा, रौ अपनी औकातै अंदर,
म्हेशा बंधुआ होइयै ता नेईं रौंह्दी खुश्बू.

2.
कोशशें मसले सुलझदे, ए ते लारा झूठ हा.
किस्मतू दे खेल हे सब, मेरा चारा झूठ हा.
बिंभले बदलू चुठे, सूरज सबूरा खट्टेआ,
आखदे जो, 'सूरजू धरती शा भारा' झूठ हा.
डिग्गदा धरती प जेकर, छेड़ बी होनी ते ही,
दिक्खेआ रातीं जो त्रुटदे, क्या ओ तारा झूठ हा?
दिक्खेआ शीशे दे ओह्के मुंढ जाई मैं जदूं,
झूठ सारा सच्च हा ते सच सारा झूठ हा.
एक्क पास्सै बिंद झाका हा, ते दूआ खामखा,
सच्च जिन्ना ढुलमुला, उन्ना करारा झूठ हा.
भीषमै तीरें प क्हिलदे मौत भोगी समझेआ,
कृष्ण दुखसुख झूठ आखै जो, ओ सारा झूठ हा.

3.
मैं जदूं बी मोड़ियै नजरें गी अंदर दिक्खेआ.
एक्क तोपे बिच्च छलकदा एक्क सागर दिक्खेआ.
जांगली होए समाजी जद, ता हत्थें गे पेई,
प्हाड़ मेरे जो हा मक्कड़, शैहर बांदर दिक्खेआ.
कतरेआ! भुड़कारना की तूं? तेरी करतूत केह?
क्या तू चुपगुम मेरे अंदर दा समुंदर दिक्खेआ?
कातलै दस्सी दलेरी, पर मैं अक्खीं मिट्टदे
ओह्दियें अक्खीं च बी नोखा जेहा डर दिक्खेआ.
डुग्गरै दी गल्ल करनां ऐं तू जम्मू बेही मड़ा,
क्या बनी, लाटी, खलैह्ली, छंब, लांदर दिक्खेआ?
जनवरी दे सुआगतै अग्गें कदें आया नेईं,
झूरदा हर साल गै जंदा दसंबर दिक्खेआ.
बोलदा ऐ नीमता ऐसा, मनै जंदा बसी,
'होश' जैसा आकड़ू बी नेईं कुदै पर दिक्खेआ.

4.
स्यालू सीत दे मारे बचारे किलकदे मौसम.
बनी बिज्जू दियां चिनगां चपासे मिलकदे मौसम.
तेरे रूपै दा जद पौंदा ऐ चानन चिट्टे पाले पर,
तेरे प्हाड़ें दियें धारें प उसलै चिलकदे मौसम.
सदा पारा शमानै पर, कदें नींदी निं मुंडी, पर—
फटै बदलें दी जद छाती, तां झिगड़े ढिलकदे मौसम.
कुसै दा रूप खिड़ेआ ऐ, नजर भरमोई जां मेरी
होई बस्ती सुनैहरी जन, ते जंगल सिलक दे मौसम.
पशाकां पाइयै हरियां, बदेसें घूमदे रौंह्दे,
ते चोले पतझरी पाई मेरे घर निलकदे मौसम.■

महेश कटारे सुगम

बुंदेली भाषा में ग़ज़ल

1.
हो रई उल्टी बात दार में कारौ है.
दिन खों कै रये रात दार में कारौ है.
खेतन की कओ तौ सुनवें खरयानन की,
उल्टी गैल बतात दार में कारौ है.
पैरें कारौ कोट कचैरी में बैठे,
तारीखें बड़वात दार में कारौ है.
दै दई ती दरखास कुजानें कितै गई,
बाबू नईं बतियात दार में कारौ है.
रपट लिखाई चोरी की दारोगा जू,
रोज हमें गरयात दार में कारौ है.
दारू बेंचत जोंन, ओई कें मुंशी जू,
बैठत, मुर्गा खात दार में कारौ है.
पंचयाट कानी कर रये हैं पंच सबई,
भैंस बछेरा ब्यात दार में कारौ है.

2.
चौड़े चकले होत जात हौ.
की चकिया कौ पिसौ खात हौ.
सीखन खों अब का सिखात हौ,
काय नौंन सें नौंन खात हौ.
पइसा सें सुख कौ का रिश्तौ,
जी के लानें मरे जात हौ.
अम्मा पैरें फटे चींथरा,
देवी पै चूनर चढ़ात हौ.
का लेनें दैंनें है तुमसें,
का ओढ़त हौ का बिछात हौ.
सुगम आदमी बनवौ सीकौ,
तुम तौ नेता बने जात हौ.
भूखे पेट प्रयाग की बातें हाय दइया.

3.
आजादी कौ सार नईं मिलौ,
जीवे कौ अधिकार नईं मिलौ.
रैते घरै चैन सें,ऐसौ,
सालन सें इतवार नईं मिलौ.
नौनें बसर जिंदगी करते,
हाथन खों रुजगार नईं मिलौ.
संगै चलवे की कै रऔ तौ,
मौका पै तैयार नईं मिलौ.
सुगम सबई सें लडंत भिड़त है,
ऊखों कोउ कौ प्यार नईं मिलौ.

4.
घास कौ छप्पर आग की बातें हाय दैया.
लोभी के मौ त्याग की बातें हाय दैया.
बसकारे में भींट उठा रये माटी की,
दीवारी पै फाग की बातें हाय दैया.
नजरन बारौ खोट बड़ी बीमारी है,
खबसूरत में दाग की बातें हाय दैया.
सींग निकारें लड़वे खों चांड़े फिर रये,
भुंसारे सें लाग की बातें हाय दैया.
जेठ मास की घाम ततूरी बज्जुर की,
ई मौसम में बाग की बातें हाय दैया.
भैरों से भर आत भूख जब खिच्च्यावै, ■

रश्मि शर्मा

पंजाबी भाषा में ग़ज़ल

1.

आकाशों आन तां डिग्गे खजुरां विच रहे अटके
तमाशा बेखदी दुनिया सुने गलियां दे विच चर्चे
सियासत दान ने रिश्ते सियासत खेड दे रहंदे
जदों तीली बने भांबड़ ते मिट्टी पौन नूं लपके
कदों तीकर खरा सोना कोठारी पाके रखोगे
जड़ो कोई नगीना फिर करो लिशकार नूं सजदे
कदे बरसात मेहरां दी कदे है औड़ कर जांदा
मेरा किहो जिहा मसीहा है नहीं इक्को जिहा बरसे
मदारी है मेरा महरम तमाशा वेखदा वी है
बनाके बांदरी मैंनू कसे रस्सी देवे झटके
गंधारी हां मैं समिआं दी नहीं खोलो मेरी पट्टी
तुहाडी कूड़ दी चमड़ी निवस्त्र हो नहीं सकदे
समें दा हाल पुछदी है कदे एह चाल तकदी है
कहो 'रश्मि' करे जेरा ना इंझ बेकार ही तड़पे

2.

जिंद निमानी बैहंदा पानी7
बहि तुरना इस झीतां थानी7
जिस भांडे विच पै जांदा है
उसदी सूरत धारे पानी7
दम दा की धरवास वे अड़िया
इक पल है दूजे ना जानीं
वांग पतासे खुर जाना इस
जीवन महज बुलबुला पानी
चिट्टे दंद कालियां जुल्फां
जोवण रुत तां आनी जानी
मौत नूं हरपल मासी आखे
अल्हड उम्र बड़ी मरजानी
ना कुझ आंदा ना लै जाना
रह जे 'रश्मि' इक कहानी

3.

जिंदगी वी साथ की निभाऊगी
वध रही है फिर वी घट दी जाऊगी
हिज्र सानू रोग अवल्ला दे गया
हूंन दवा दारू वी ना कम्म आऊगी
जख्म डूंगे दे गया जो शक्स मैंनू
टीस ओहदे दिल चों वी ना जाऊगी
तूं जो आखें हस पऊंगी मैं तां पर
अक्ख दी नमी किवें सुक्क पाऊगी
रहमतां जे रब्ब ऐंवें ही बख्श दे
याद किस नूं ओसदी फिर आऊगी
रश्मी क्यों सुने एह दुनिया तैनू दस्स
एह तां राग उच्चियां दे गाऊगी

4.

छैनी थौडी तेसा आरी की की लै के बैठां मैं
मैथों अख्खर घड़ नई हूंदे किस पाधे नू पुच्छां मैं
दरवेसां दे बाने पा के चोर उचक्के फिरदे ने
चोरां वालीआं मोहरां लग्गीयां दरवेसां नू वेखां मैं
कौन ए सच्चा कौन ए झूठा मैंनू भेद नहीं काई
जद दे साधु मुज़रिम होये सभ नू शक नाल तोलां मैं
अक्खरां दे नाल अक्खरां दी जिस सांझ ने शब्द् बनाये सी
ऐसी विओली वा बग्गी बन विशियर लड़दी तक्कां मैं
चिंता फ़िक्र करां हर वेले एहो फितरत है मेरी
मेरी फितरत कौन पछाने मोमोठगनी लग्गां मैं
मिठ्ठियां मिठ्ठियां गल्लां वाले बुल्लां नू सी बैठे ने
पहलों सी जां हुन ने सच्चे एहो बैठी सोचां मैं
कुझ ने रेशम रेश्म बाने कुझ पल टाकी लाके सांभे
यादां दी अलमारी 'रश्मि' अक्सर बैठी फोलां मैं ■

द्विजेन्द्र द्विज

हिमाचली (कांगड़ी) भाषा में ग़ज़ल

1.

इक्क जमोरड़ ऐब पुराणा सीहस्से दा,
छुटदा ई नी सच्च गलाणा सीहस्से दा.
तोड़ी नैं, भन्नी नैं, प'थरां मारी नैं ?
दस्सा किह्यां सच्च छडाणा सीहस्से दा.
अपणे चेहरे दा नीं झलणां सच्च मितरां,
प'थरां ने थोब्बड़ छड़काणा सीहस्से दा.
किरचां दा एह् ढेर तुसां जे दिक्खा दे,
एह्त्थू ई था सै सैह पुराणा सीहस्से दा.
कदी ता मितरो ! पूंह्ज्जा अपणे मूंह्यें भी,
घड़घड़ियें भी क्या लसकाणा सीहस्से दा.
बाह्रे दी दुनिया भी दिखणीं अंदरे ते,
इक्क लकोळू भी रखुआणा सीहस्से दा.
इट कुत्ते दा बैर ऐ सीहस्से प'थरे दा,
प'थरां नैं क्या हाल सुणाणा सीहस्से दा,
इक्क स्याणां माहणूं एह समझांदा था,
प'थरां बिच नीं सैह बसाणा सीहस्से दा.
भखियो तौन्दी अग्ग बर्हा दी पर अपणां,
हर समियान्नाँ, ठोह्ठकाणा सीहस्से दा.
जे घड़ेया सैह् भजणां भी ता था इक दिन
'द्विज' जी ! किह्तणां सोग मनाणा सीहस्से दा.

2.

गोद्दा च कुदरती दिया खेह्लली खलाह्ड़ी गै.
सैह्यँ तियैं सै सारेयां जँगळाँ उजाड़ी गै.
बाग्गाँ बणां सुआरन्ना बड्डे मराह्ड़ी गै,
फुल्लाँफळाँ नैं सारेयाँ डाळाँ भी राड़ी गै.
सैल्ले बणे दे सारेयाँ रुक्खाँ दी खैर मन्ना,
दो चार लोक अज फिरि लइ नैं कुहाड़ी गै.
दस्सा भला गरीबुएँ क्या था बगाड़ेया,
झोट्टे घुळी नैं तिसदिया फस्ला उजाड़ी गै.
जँगलाँ च आये होर भी बड्डे नसाणची,
छोट्टे सकारियाँ दियाँ सिस्ताँ बगाड़ी गै.
ज्ञान्ने दी गल्ल ता इतणी ऐ हाक्खीं मटोन्द्याँ,
जबरे दे सारे पोह्थुआँ लइ नैं कबाड़ी गै.
इसजो था कोई खोट एह् जाह्लू बी उँगरेया,
बूट्टा दिले दा बान्दर इ झप्फी झफाड़ी गै.
आस्साँ दा डाल जे कदी जाई नैं पुँगरेआ,
चँदरे ह्लैट तिस्देयाँ फुल्लाँ इ झाड़ी गै.
'बच्चा ! कुसी नीं दिक्खेया नचदा बणे च मोर,'
स्याणे दे बोल मेरियाँ हाक्खीं घुआड़ी गै.

3.

न्ह्ठ्दा न्हेरा सुणीं नैं दाड़ा धुप्पा दा.
उच्चा मत्था खड़ा क्याड़ा धुप्पा दा.
रोज इ छपदा कोई पुआड़ा धुप्पा दा,
लोक्काँ कित्ता हाल ता माड़ा धुप्पा दा.
काह्लली ता औह्लगी फाड़ी ने बदळाँ जो,
काह्लली ता चलगा इ कुहाड़ा धुप्पा दा.
फेल मते बच्चे थे पास ता घट घट थे,
हर कुसियो कू याद था प्हाड़ा धुप्पा दा.
पुट्टी खुट्टी घुळकी टकरां मारी ने,
किछ ता घड़ना पौन्दा घाड़ा धुप्पा दा.
क्या बर्फान्नी कुड्डाँ बिच भी पुह्जगी एह,
ऐसा भी कोई ओंह्ग ध्याड़ा धुप्पा दा.
बड़िया मिह्लता बड़ेयाँ जतनां ने आहियो,
ईह्याँ ता मत हथ परछाड़ा धुप्पा दा.
काळियां मणसां वाळे लोक ता सोच्चा दे,
होर नीं किछ ता तम्बु इ फाड़ा धुप्पा दा.
नीं होया, नीं हुन्दा नीं, होई सकदा,
'द्विज' जी! न्हेरे नैं झँझराड़ा धुप्पा दा.

4.

फाणे पर दरया कचियां पतुआरां ते भी डर लगदा.
पतणां पर भी खतरे अद्धमंझारां ते भी डर लगदा.
फरड्डुआं, ककडां, हिरणां पर तित क्हूमत मिरगां रिच्छाँ दी,
एह सोच्ची नैं सैल्लियां सैल्लियां धारां ते भी डर लगदा.
ओह्त्थू जाई बरफे बिच इक्क रात जे कटणा पोए ता!
मितरा बांकियां बांकियां धौळाधारां ते भी डर लगदा.
खूनपसीन्ना इक्क करी भी पल्लैं पोन्दा नीं किछ भी,
बान्दर पाह्ल जुआड़ाँ खिल्लेयां हारां ते भी डर लगदा.
जीह्याँ हन मजबूर करा दे फाक्के फाइह्याँ लैंणे जो,
बडेयां बचनां कसमां कौलकरारां ते भी डर लगदा.
जिह्याँ सिरां पर हत्थ नीं कोई, कोई बब्बगुसाईं नीं,
तूह्लेयाँ तिन्हाँ सिरां पर बड्डेयाँ भारां ते भी डर लगदा.
न्हेरियाँ नीत्ताँ, काळियाँ मणसाँ, 'द्विज' जी ! मैह्ले अँदरून्ने,
मुलखे दे डोळे जो हुण ता क्हारां ते भी डर लगदा. ■

प्रताप सिंह डाभी 'हाकल'

गुजरती भाषा में ग़ज़ल

1.

होय सवारे एवो सांजे, ए माणसने शोधी काढो.
बोले जे बस एक अवाजे, ए माणसने शोधी काढो.
नथी खबर क्यां गाम जूनागढ़, ना नरसी'नुं नाम सुण्युं छे,
मनमां नाचे झांझ पखाजे, ए माणसने शोधी काढो.
सूट बूट हो छोने पहेर्या पण भगवुं छे भीतर जेनुं,
जेमां एक कबीर बिराजे, ए माणसने शोधी काढो.
वात अढी अक्षरनी छे पण वेद अने कुरान समाया,
निर्मल मन पांचेय नमाजे, ए माणसने शोधी काढो.
समय पड़ये सघळुं छोड़ीने, सिंह समी जे त्राड करे छे,
अमथो अमथो जे ना गाजे, ए माणसने शोधी काढो.
मेलोघेलो साव बळेलो, तोये नोखी चमक आंखमां,
आसपासना जीवतर मांजे, ऐ माणसने शोधी काढो.
वीस वरसथी फाट्युं स्वेटर, हर शियाळे फ्हेरी फरतो,
बाळकना जाकिटने काजे, ए माणस ने शोधी काढो.

2.

खुट्युं तेल तोये आ कोना प्रतापे? हजु पण दिवो एकधारो बळे छे.
रटण एकधारुं अने जापजापे, हजु पण दिवो एकधारो बळे छे.
सूकाई गई छे नदी तो युगोथी,नथी रेत पाणा, न कंकर कशुं त्यां,
हलेसा विनाना तूटेला तरापे, हजु पण दिवो एकधारो बळे छे.
दिवाळीनी क्यां छे हवे राह पण ने छे क्यां वाट कोई नवाये वरसनी ?
छे बळवानुं' एक ज ए क्रियाकलापे, हजु पण दिवो एकधारो बळे छे.
तूट्यां गढ़ झरोखा, खर्या कांगराओ, फकत खाई किल्लानी फरते बची छे,
सुना चौक वच्चे कोई गाम झांपे, हजु पण दिवो एकधारो बळे छे.
पड़ी रात तोये ना तमरांनुं तमतम, नथी आगियाना झबकता इशारा,
को' झांझरनी रणझणना गोझारा श्रापे, हजु पण दिवो एकधारो बळे छे.
न शंकोरी कोईए कदी शग ना कोईए कदी एनी सामे नजर पण करी छे,
अरुझी अजंपे, विखरता विलापे, हजु पण दिवो एकधारो बळे छे.

3.

जात सामे जातना अघरा सवालो मोकलो.
खुदनुं सरनामुं लखी, खुदने टपालो मोकलो.
एकनो एक ज भले घुमराय ए बनशे गझल,
आम टोळाबंध ना भेगा खयालो मोकलो.
जेटली ते मोकली, एनी रसीदो पाठवी,
ना खुदा हमणां कोई बीजी बबालो मोकलो.
दर्द मारा भागथी लाखोगणुं छे भोगव्युं,
हाल पूरतो ना सनम कोई हवालो मोकलो.
सात समदर पी जवानी छे तरस साकीने कहो,
झांझवाना जळ भरेलो, ना पियालो मोकलो.
कोई अजाणी केडी पर पगरण हवे 'हाकल' धरे,
ना कशो सामान ना कोई रसालो मोकलो.

4.

शोभे छे आगवा कोई किरदारमां हवेली.
शाणी बधुंय समजे अणसारमां हवेली.
नाभि ने नाळ वच्चे नर्तन थयुं नवेलुं,
त्यारे चणाई नवतर आकारमां हवेली.
छेटी विभावनाथी, सहु वादथी अलग छे,
जीव्या करे चिंधेला व्यवहारमां हवेली.
नव द्वारथी रचातो संबंध सथूळ साथे,
चेतन झीले छे भीतर धबकारमां हवेली.
शोभित करे छे एने सहु कांगरा झरुखा,
पण एमने खबर क्यां, भेंकारमां हवेली.
माने कोई जो अमथुं के हुं ज एनो मालिक,
पलटाई जाय पळमां, सूनकारमां हवेली.
माटीथी छे रचाई, खेंचाण माटीनुं छे,
भळवानी माटीना कोई पोकारमां हवेली.
तपवानुं रात दिवस आखर पूरूं थवानुं,
शणगार आगनो थई अंगारमां हवेली. ■

डॉ. सतीश सत्यार्थ

हिंदी भाषा में ग़ज़ल

1.

बाद मेरे और कोई आ गया.
मेरे जाने से किसी का क्या गया.
चाहने को क्या नहीं चाहा मगर,
बाद तेरे कुछ नहीं चाहा गया.
तू गया तो साथ बीनाई गयी,
और फिर मैं प्यास से मारा गया.
क्या बचा है इश्क़ में ये पूछिए,
आप ये क्या पूछते हैं क्या गया.

2.

दोस्ती है धर्म मेरा ज़ात मेरी.
दुश्मनों से पूछिए औक़ात मेरी.
इश्क़ क्या है जाल है मैंने कहा था,
तुम मगर सुनते कहाँ हो बात मेरी.
सामने था वो मगर कुछ फ़ासले पर,
सोचिए कैसे कटी है रात मेरी.
आप से फिर हो रहा है इश्क़ मुझ को,
इश्क़ में फिर हो रही है मात मेरी.

3.

ख़्वाब ऐसा हसीं दिखाई दिया.
फिर मुझे कुछ नहीं दिखाई दिया.
वरना बेकार थीं मेरी आंखें,
शुक्र है तू कहीं दिखाई दिया.
आसमानों से टूट कर तारा,
मुझ को ज़ेर ए ज़मीं दिखाई दिया.
सब दिखाई दिया उसे लेकिन,
एक मैं ही नहीं दिखाई दिया.
चांद बादल को ओढ़ कर इक दिन,
आप का हमनशीं दिखाई दिया.

4.

फिर न दिल से कभी निकाला गया.
जो मिरी ज़िंदगी में आया गया.
मुद्दतों बाद वो मिला था मुझे,
क्यों मुझे नींद से जगाया गया.
रंग उसका उतर गया सारा,
जब उसे आईना दिखाया गया.
बात से फिर पलट गई लड़की,
फिर कोई लड़का आज मारा गया.
मेरी तो जान ही निकल गई जब,
दोस्त कह कर मुझे पुकारा गया. ■

इरशाद ख़ान सिकंदर

भोजपुरी भाषा में ग़ज़ल

1

हम मान भी लीं लेकिन आसार त कम बाटे.
जे पीही उहे जीही कुदरत के नियम बाटे.
पी जाला अन्हरिया के सूरज भी शराबी ह,
बा चंदवो शराबी पर उम्मीद से कम बाटे.
हम ओही घड़ी खोलब आवाज़ के दरवाज़ा,
जब लागी खुदे हमके अब बात में दम बाटे.
प्याला के लेखा लागे महबूब के दूनों होंट,
जे पीए सफल ओकर कुल सातो जनम बाटे.
हम बानी नया नाया इरशाद मुहब्बत में,
का होई कि अब आगे पत्थर के सनम बाटे.

2

दिल में हलचल मचवले बा का हो?
चांद पागल बनवले बा का हो?
एतना बेकल तू कहवां जा तारा,
केहू अंखिया बिछवले बा का हो?
तू अकेले में मुस्कुरा तारा,
फूल, बिजली गिरवले बा का हो?
गोड़ थिरके के समझीं का मतलब,
नाच,नेहिया नचवले बा का हो?
काहे अचके में तूं चिंहुक गइल,
नींद सपना उड़वले बा का हो?

3

घड़ी भर घाव के पथराव टल जाला कि ना बोला.
चनरमा देखके मनवा बहल जाला कि ना बोला.
नया बानी मुहब्बत में त सोचलीं पूछ लीं तोंहसे,
मिलन के हाल दुनिया से कहल जाला कि ना बोला.
केहू अचके में बिन बोलले कलेजा काढ़ के ले जाय,
त अइसन हाल में दुनिया बदल जाला कि ना बोला.
मोहब्बत के तरफ अपने क़दम आगे बढ़ल त का,
खेलौना देखिके बच्चा मचल जाला कि ना बोला.
अगर मुट्ठी में इच्छा बा त केहू रोक ना पावे,
जदी हो रेत त छन में फिसल जाला कि ना बोला.

4

ख़्वाहिश बा कवनो अइसने जादू देखाइ दे.
हम देखीं आइना त उहे ऊ देखाइ दे.
अइसे उ हमरा याद में आवस कभी कभी,
जइसे अन्हरिया रात में जुगनू देखाइ दे.
बाटे हो रोम रोम में खुशबु वो फूल के,
चाहेला मन कि सामने खुशबु देखाइ दे.
अइसे भी ज़िन्दगी में त आवेला कतना लोग,
जइसे केहू के आंखि में आंसू देखाइ दे.
बुझिह कि ऊहे बाटे हो इरशाद के गजल,
भोजपुरिया रंग में जब कभी उर्दू देखाई दे. ■

प्रशांत बेलवलकर

मराठी भाषा में ग़ज़ल

(सुरेश भट की मूल मराठी ग़ज़ल और उसका भावानुवाद प्रशांत बेलबालकर द्वारा)

'केव्हा तरी पहाटे'

केव्हातरी पहाटे उलटून रात्र गेली,
मिटले चुकून डोळे हरवून रात्र गेली.

कळले मला न केव्हा सुटली मिठी जराशी,
कळले मला न केव्हा निसटून रात्र गेली.

सांगू तरी कसे मी वय कोवळे उन्हाचे ?
उसवून श्वास माझा फसवून रात्र गेली.

उरले उरात काही आवाज चांदण्याचे,
आकाश तारकांचे उचलून रात्र गेली.

स्मरल्या मला न तेव्हा माझ्याच गीतपंक्ती,
मग ओळ शेवटाची सुचवून रात्र गेली.

आता कुशीत नाही ती चंद्रकोर माझी,
हलकेच कूस माझी बदलून रात्र गेली.

अजुनी सुगंध येई दुलईस मोगऱ्याचा,
गजरा कसा फुलांचा विसरुन रात्र गेली ?

'भोर के समय'

पौ फटी तो रात ढल चुकी थी,
जरा आंख क्या लगी रात गुम हो चुकी थी.

न थी खबर मुझको कब मेरी बाहें खुली जरा सी,
न चला पता मुझको कब रात ढल चुकी थी.

कमसिन है अभी धूप भी कैसे बताऊं मै उम्र उसकी,
सांसों की धड़कन सुनकर कब रात जा चुकी थी.

बस दिल में अब बसी है आवाज चांदनी की,
तारों को समेटकर बाहों में कब रात चल चुकी थी.

याद न आएं मुझे मेरे ही गीत पंक्ति,
फिर आखरी याद छोडकर अब रात सो चुकी थी.

न रही वह चकोर अब बाहों में मेरे,
बाहें मेरी पलटकर अब रात ढ़ल चुकी थी.

दुलाई में बाकी है खुशबू अभी मोगरे की,
भूलकर फूलों के गजरे को कहां रात गुम हो चुकी थी. ■

नरेश शांडिल्य

हिंदी भाषा में ग़ज़ल

1.
यूं कहने को बहकता जा रहा हूं.
मगर सच में संभलता जा रहा हूं.
उलझता जा रहा हूं तुझमें जितना,
मैं उतना ही सुलझता जा रहा हूं.
भले बाहर से दिखता हूं मचलता,
मगर भीतर ठहरता जा रहा हूं.
ज़मीं से पांव भी उखड़े नहीं हैं,
फ़लक तक भी मैं उठता जा रहा हूं.
नदी इक मुझमें मिलती जा रही है,
मैं सागरसा लहरता जा रहा हूं.

2.
मैं रफ़ू दर रफ़ू दर रफ़ू.
मेरे पैबंद ढकता है तू.
दरबदर दरबदर दरबदर,
तेरी ख़ातिर फिरा कूबकू.
जाने क्यों कर यकीं है मुझे,
तू भी मुझसा ही है हूबहू.
सौंप रक्खा है खुद को तुझे,
अब तू रख या न रख आबरू.
बस यही एक अरमान है,
काश तुझसे मिलूं रूबरू.

3.
ग़मे जां की दवा कैसे करोगे?
सज़ाओं को जज़ा कैसे करोगे?
सरापा गुंथ चुके हैं तुममें अब हम,
हमें खुद से जुदा कैसे करोगे?
बदन से हम निकल आए हैं बाहर,
कहो हमको फ़ना कैसे करोगे?
तुम्हारी शर्त सारी मान भी लें,
तो फिर शिकवागिला कैसे करोगे?
ज़रासा फ़ासला बेहतर है, वर्ना,
मुहब्बत बामज़ा कैसे करोगे?

4.
ख़ामोशी पढ़ सकते हो?
फिर तुम मेरे जैसे हो.

पीर नहीं तो क्या हो तुम?
तुम आंखों से टपके हो.

तुम ? और मुझ पर मरते हो?
यार हटो, तुम झूठे हो.

मुझसे होड़ लगाओगे?
जाओ, अभी तुम बच्चे हो.

कैसे हो तुम ? बतलाऊं?
तुम मुझसे भी अच्छे हो. ■

विदेशों में ग़ज़ल

'दीवाना रायकोटी' सोम नाथ गुप्ता (न्यूज़ीलैंड से)

1.
अंधेरों में उजाले छुपा दिये जाते हैं कई
रिश्तों की आड़ में गुनाह करते हैं कई.
कोई तो किताब होगी जो बता दे, क्यों
हंसने की आरज़ू में अश्क़ पीते हैं कई.
छोटी छोटी बातें गर दिल में ही रह जायें
तो यारो जीते जी मर जातें रिश्ते हैं कई.
आशिक़ों की बात ना पूछो तो अच्छा है
गमों से लिपटे बिता देते जो राते हैं कई.
इबादतएयार में इस क़दर मशगूल हुए कि
भूल गये ज़िन्दगी के अफ़साने हैं कई.
शायद कोई आ कर दस्तक दे जाये
उम्मीद का दामन बैठे फैलाये हैं कई.
जिन को रही हम से मुहब्बत सारी उम्र
फेर कर मुंह उन में से निकल जाते हैं कई.
ख़्वाहिशों ने कर दिया इस क़दर 'दीवाना'
कि अपनी हस्ती ही भूल जाते हैं कई.

2.
गुजर गया जो लम्हा वो लौट के नहीं आयेगा.
मगर नाता वक़्त से हमारा टूट नहीं जायेगा.
मान बैठे जो हमसफ़र तुम्हें फिर तलाश कैसी
यक़ीन हमारा कायम है यह बदल नहीं जायेगा.
न बदले हैं हम कभी यारो आबोहवा के साथ
वो बदल जायेगा तो हो खुदा नहीं जायेगा.
ढूंढूं क्यों उसे जो शामिल है मेरी आदत में
नशा गहरा है यारी का सुरूर नहीं जायेगा.
खैरो ख़बर अपनों की कभीकभी पूछते रहिए
महकता रहेगा ताल्लुक़े इत्र तो लुत्फ़ नहीं जायेगा.
आती रहने दीजिए दरीचों से ताज़ा हवा 'दीवाना'
फिर आलमे होश से कोई बेहोश नहीं जायेगा.

3.
चाह कर भी चाहत को हम रोक न पाये
वेग तूफां का किसी सूरत हम रोक न पाये.
मोहक मुस्कान तेरी सांसों में मेरी घुल गई
बहकते गये जज़्बात और हम रोक न पाये.
शबाब तेरा किसी शराब से कम तो नहीं
रिंद होने से खुद को हम रोक न पाये.
सब्ज पत्ते कब सूख गये पता ही न चला
बदलती रुत के बहाव को हम रोक न पाये.
ज़रा सा उठा जो नक़ाब उजाला हो गया
आदाब को जो उठा हाथ हम रोक न पाये.
क़सीदा हुस्ने यार पर जो कहने लगा 'दीवाना'
कलम की रफ़्तार को फिर हम रोक न पाये.

4.
मेरी खुशी न पूछ मेरा मलाल न पूछ
मेरी सोच न पूछ मेरा ख़्याल न पूछ.
तेरे पास होगा बहुत कुछ जानने को
जो दिल को दुखाये वो सवाल न पूछ.
धड़कनों में बसा है वो तू ही तो है
तू अपनी कह मेरा हाल न पूछ
है मलामत बहुत ज़िन्दगी में यार
कैसी है ज़माने की चाल न पूछ.
नफ़रतें दफ़्न कर दे क्यों परेशान है
क्यों और कैसे हुआ वबाल न पूछ.
न उलझ किसी से नापसंद बात पर
तू अपना ख़्याल रख उसका ख़्याल न पूछ.
जब तक ज़िन्दा है मुझमें अना मेरी
आंख दिखाने वाले मेरी मजाल न पूछ
बदल जाती है ख्वाहिशें वक़्त के साथ 'दीवाना'
कब बदलेंगे माहओसाल न पूछ. ■

डा. भावना कुंअर (ऑस्ट्रेलिया से)

विदेशों में ग़ज़ल

1.
न जाने मन में मेरे इतनी बेकली क्यूं है
वो जो मेरा था कभी आज अजनबी क्यूं है
गरज उठा है ये बादल कड़क रही बिजली
हुआ है क्या कि ये दोनों में यूं ठनी क्यूं है
बता दे आज हमें कोई तो ज़रा इतना
दुखों की रात ही होती सदा घनी क्यूं है
हां देखने में तो लगते हैं खूबसूरत ये
ना जाने नींव ही रिश्तों की खोखली क्यूं है

क्यूं झोंपड़ी ही सदा डूबती अंधेरों में
हो दिन या रात हो महलों में रोशनी क्यूं है
हसीन ख़्वाब ही कहते हैं 'भावना' इसको
तो मुश्किलों से भरी फिर ये ज़िंदगी क्यूं है

2.
जाग जाए जो जोश अंदर का
फिर रहेगा ना काम कुछ डर का
हमने उसमें ही जिंदगी जी ली
साथ उनका मिला था पल भर का
काटते हैं क्यूं पंख पंछी के
उड़ ना पाता कोई बिना पर का
वो जो आए इधर तभी से ही
कोना कोना महक रहा घर का
वो कहीं आ ना जाएं मिलने को
द्वार रखते हैं हम खुला घर का

3.
वो तो समझ ना पाया था चलती हवा का रुख़
ठोकर लगी ना उठ सका कैसी बला का रुख़
लोगों का नज़रिया ही बदलने था जब लगा
हमको भी बदलना पड़ा अपनी कला का रुख़
करके वो बेवफ़ाई भी फलते रहे सदा
तू भी बदल के देख ले अपनी वफ़ा का रुख़
कितना शिफ़ा था हाथ में लालच नहीं था जब
लालच जो मन में आ गया बदला शिफ़ा का रुख़
बदलें भले हों दोस्त या बदला हो ज़माना
मां बाप का ही ना कभी बदला दुआ का रुख़
बदली निगाह देख के लोगों की आजकल
डरकर के तितलियों ने भी बदला अदा का रुख़
खुद ही किनारा कर लिया हमने तो 'भावना'
बदला हुआ से देख के उसकी वफ़ा का रुख़

4.
मेरे भीतर नन्ही बच्ची बैठी है
जो बाहर आने से थोड़ा डरती है
मेरी उलझन क्या तुझसे कुछ कहती है
या बस अपने मन के भीतर रहती है
दिल की बातें तुझसे कहना चाहूं तो
लब पर मेरे ख़ामोशी छा जाती है
महफ़िल में जब तेरी बातें होती हैं
तुझसे मिलने की बेचैनी बढ़ती है
नन्ही किरणें बादल में छुप जाती हैं
आंख मिचौली फिर दोनों में होती है. ■

जसबीर कालरवि (अमेरिका से)

विदेशों में ग़ज़ल

1.

पास आकर जो दूर होता है.
उसका अपना ग़ुरूर होता है.
इश्क़ ही जाम हो या साक़ी हो,
सबका अपना सुरूर होता है.
पार कर ले घने जो अंधेरे,
उसके माथे पे नूर होता है.
चांद तारे बिछा दूं पैरों में,
ये भी कैसा फितूर होता है.
कुछ तो होती है बदगुमानी भी,
वक़्त का भी कुसूर होता है.
वो जो धड़कन में ही ठहर जाए,
वो कहां दिल से दूर होता है.

2.

वो कहते हैं मैं पत्थर हो गया हूं.
मैं दिल से मोम सा पर हो गया हूं.
मेरे अपने किनारे गुम गए हैं,
मैं क़तरा था समंदर हो गया हूं.
उसे तो शहर सारा जानता है,
मैं पर बदनाम घरघर हो गया हूं.
गिरे हों पेड़ के सब ज़र्द पत्ते,
मैं कुछ ऐसा ही मंज़र हो गया हूं.
मेरे मन में नहीं है अब कोई भी,
मैं एक सुनसान खंडहर हो गया हूं.
मुझे सब चांद तारे सोचते हैं,
मुझे लगता मैं अंबर हो गया हूं.

3.

ज़िंदगी दूर की सवारी है.
जिसमें सामान सबका भारी है.
आइने में नज़र न आये जो,
उसको मिलने की बेक़रारी है.
ज़िंदगी मौत बहस में शामिल,
ये मुकदमा अज़ल से जारी है.
उसकी आंखों से शय निकलती जो,
उसकी बस और ही ख़ुमारी है.
ज़िंदगी अब तो मर ही जाएंगे,
मौत ने तुमको आंख मारी है.

4.

जबसे है अपने बीच मुलाक़ात की कमी.
तब से है ज़िंदगी में किसी बात की कमी.
जो लोग ज़िंदगी में हमें छोड़कर गए,
उनके हमारे बीच थी जज़्बात की कमी.
उसने तो लग रहा है भुलाना ही एक दिन,
दिखती है साफ़ हमको शिकायत की कमी.
जी भर के ज़िंदगी ने हमें तो जिया मगर,
बातों में उनकी अब है सवालात की कमी.
अपना हिसाब कौन करे बाद मौत के,
अपने फ़साने में है हिकायात की कमी. ■

प्रगीत कुंअर (ऑस्ट्रेलिया से)

विदेशों में ग़ज़ल

1.
याद फिर से आज उनकी आ गई
साथ बीते दिन वही दोहरा गई
दिन पसीना बन जला जब धूप में
रात शीतल चांदनी बिखरा गई
एक आंधी फिर गुजरकर पास से
ज़ोर से ये दिल मेरा धड़का गई
हमने जिस उम्मीद पर रक्खा यक़ीं
मुश्किलों को और भी उलझा गई
हम लिये बैठे रहे नाराज़गी
करके मीठी बात वो बहका गई
कल हमारा है कहा था कान में
ज़िंदगी देकर के यूं धोखा गई
बात, जिसको दूर रक्खा आंच से
एक चिंगारी उसे सुलगा गई

2
पहले पल में जो लगता जानापहचाना है
अगले पल में हो जाता वो ही बेगाना है
माना अपने आज को कल तक कल हो जाना है
पर यादों को वापस मिलने अब भी आना है
मरने के भी बाद क्यों हम फिर पैदा होते हैं
पैदा होकर जब हमको फिर से मर जाना है
कितने सच हम दफ़ना देते हैं खुद ही इसमें
हमने दिल के भीतर रक्खा इक तहख़ाना है
आंसू से भीगे चेहरे फिर भीतर रखने हैं
नक़ली चेहरे पहने हमको फिर मुस्काना है

3.
कितने उदास चेहरों की मुस्कान हैं हम भी
शायद इसीलिए अभी नादान हैं हम भी
दिल के घरों में क़ैद ना हो पाएं ख्वाहिशें
ऐसे घरों में दौड़ते दालान हैं हम भी
नफ़रत की जो दीवार खड़ी कर दी आपने
उसको उड़ाएगा वही तूफ़ान हैं हम भी
जब से गए हैं दिल से निकलकर वो उस तरफ़
हों भीड़ में फिर भी कहीं वीरान हैं हम भी
हर रात कहां नींद में जाते हैं घूमने
आते हैं सुबह लौट क्यूं हैरान हैं हम भी

4.
आंसुओं की ये नदी राह जहां छोड़ती है
चाहे जिस ओर से गुजरे वो निशां छोड़ती है
दौड़ता जा ही रहा हूं मैं अभी राहों पर
देखना है कि मुझे राह कहां छोड़ती है
तेल नफ़रत का दिए में हो कि अपने भीतर
उसकी लौ दूर तलक काला धुआं छोड़ती है.
ज़िंदगी यूं तो बड़े ठाठ से कटती है मगर
मौत हो सामने तो अपने गुमां छोड़ती है
आंखोंआंखों में अगर बात कभी हो पाए
हमने देखा है कि लफ़्ज़ों को जुबां छोड़ती है
बाद बचपन के बुढ़ापा ही चला आता है
वक्त की मार कहां किसको जवां छोड़ती है ■

श्रद्धा जैन (सिंगापुर से)

विदेशों में ग़ज़ल

1.

कैसे मुमकिन है, ख़मोशी से फ़ना हो जाऊं.
कोई पत्थर तो नहीं हूँ कि ख़ुदा हो जाऊं.
फ़ैसले सारे उसी के हैं, मिरी बाबत भी,
मैं वो औरत हूं कि राज़ीबरज़ा हो जाऊं.
धूप में साया, सफ़र में हूं क़बा फूलों की,
मैं अमावस में सितारों की ज़िया हो जाऊं.
मैं मुहब्बत हूं, मुहब्बत तो नहीं मिटती है,
एक ख़ुश्बू हूं, जो बिखरुं तो सबा हो जाऊं.
गर इजाज़त दे ज़माना, तो मैं जी लूं इक ख़्वाब,
बेड़ियां तोड़ के आवारा हवा हो जाऊं.

2.

मुश्किलें आएंगी जब, ये फैसला हो जाएगा.
कितने पानी में है सब, इसका पता हो जाएगा.
दूरियां दिल की कभी जो, बढ़ भी जाएं हमसफ़र,
रोकना मत तुम क़दम, तय फासला हो जाएगा.
लाए थे दुनिया में क्या तुम, लेके तुम क्या जाओगे,
क्या महल, क्या रिश्तेनाते, सब जुदा हो जाएगा.
तुम दुआ मांगों तो दिल से और रखो उस पर यक़ीन,
गर बुरा होना भी होगा, तो भला हो जाएगा.
आरज़ू थी फूल इक, दामन में खिल जाए मेरे,
और गर ये भी न हो तो क्या ख़ला हो जाएगा.
ज़िंदगी के रास्ते होते ही हैं कांटों भरे,
साथ 'श्रद्धा' भी रही तो हौसला हो जाएगा.

3.

अगर कट जाएं दो दिन भी ख़ुशी में.
बहुत हैं, चार दिन की ज़िंदगी में.
भुला कर सारी रंजिश रोइए न,
यही करते हैं अक्सर रुखसती में.
परेशां हूं, बहुत हैरान हूं मैं,
मुझे साये ने छोड़ा चांदनी में.
हमें सुरख़ाब के पर लग गये हैं,
मज़ा ही और है दीवानगी में.
समंदर से अलग बहती है कल कल,
घमंड इतना है देखो इस नदी में.
अंधेरे रूह के मैं कैसे देखूं,
बदन है क़ैद मेरा रौशनी में.
खयालों के कई नायाब हीरे,
छुपा रक्खे हैं मैं ने डायरी में.

4.

वो सारे ज़ख़्म पुराने, बदन में लौट आए.
गली से उनकी जो गुज़रे, थकन में लौट आए.
जो शहरे इश्क था, वो कुछ नहीं था, सहरा था,
खुली जो आंख तो हम फिर से वन में लौट आए.
ये किसने प्यार से बोसा रखा है माथे पर,
कि रंग, ख़ुशबू, घटा, फूल, मन में लौट आए.
गए जो ढूंढने खुशियां तो हार कर 'श्रद्धा',
उदासियों की उसी अंजुमन में लौट आए. ■

फूल देई, छम्मा देई

डॉ. भूपेंद्र बिष्ट

पाकिस्तान के उस इलाके के रहने वाले जहां अफगानिस्तान खत्म होता है और हिंदुस्तान शुरू, सरहद के फिल्मकार और लेखक सागर सरहदी की फिल्म 'बाज़ार' (1982), जो स्मिता पाटिल की बेहद कामयाब फिल्म भी रही, में मकदूम मोहिउद्दीन की मकबूल ग़ज़ल रही

'फिर छिड़ी रात बात फूलों की
रात है या बारात फूलों की.
फूल खिलते रहेंगे दुनिया में,
रोज निकलेगी बात फूलों की.'

आज चैत्र माह की सक्रांति के दिन यह गीत बेसाख्ता ज़ेहन में उभरने लगता है. दिन है ही ऐसा. फूलदेई का खिला खिला, पुष्पित दिन.

फूलों से भरा, प्रसन्नता की कामनाओं से भरा यह फूलदेई लोक पर्व वस्तुत: प्रकृति का आभार प्रकट करने का पर्व है. उत्तराखंड में इसे बड़ी भावना और मन से मनाया जाता है. दरअसल नदी, पहाड़, गाड़ गधेरे, चुपटॉल, झरने, पशु पक्षी, पेड़ पौधे और फल फूल के साथ मनुष्य के साहचर्य का यह अकेला और विलक्षण मौका है, बोले तो पहाड़ के गांवों का एक पारंपरिक उत्सव.

छोटे छोटे बच्चे थाली में या रिंगाल की टोकरी जैसी कंडिया में बुरांश, पियोंली, भीटोर, केसिया, सकीना, मालू, कुंजा, आड़ू, खुमानी और सरसों के फूलों के साथ बांज के झड़े हुए मौल्यारगुच्छ को सजाकर तथा अक्षत चावल ले घर घर जाकर देली (दहलीज) को पूजते हैं और हर दरवाजे और सबके घर परिवार के लिए मंगल गीत गाते हैं

'फूल देई छम्मा देई, देंणी द्वार भर भकार
य देई में हो खुशी अपार, य देई कौं बारंबार नमस्कार.'

यानि आपकी देहरी हमेशां फूलों से भरी और सबकी रक्षा करने वाली हो. समय इस देहरी के अनुकूल रहे, इस घर के भंडार भरे रहें, इस देहरी को बारम्बार प्रणाम. ये द्वार खूब फूले फले.

घर के बड़े बुजुर्ग बच्चों को स्नेहाशीष देते हैं और यथाशक्य उपहार/ रुपया पैसा भी.

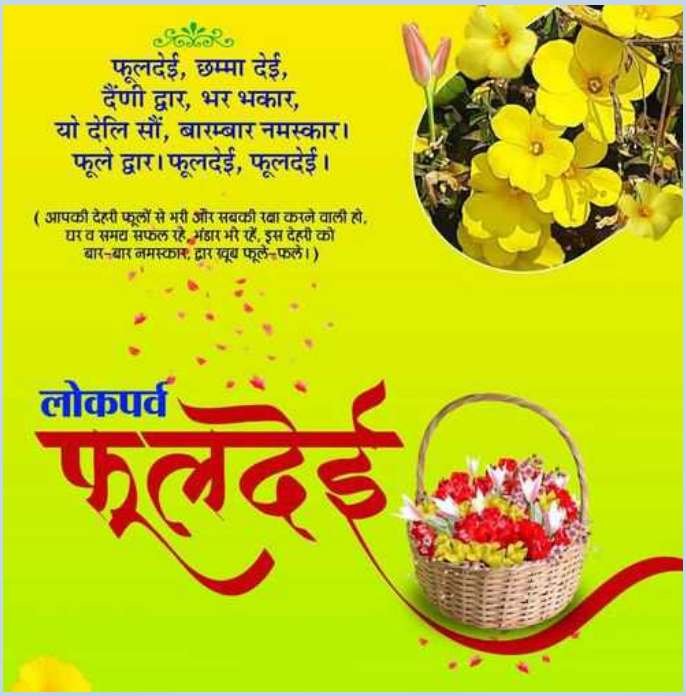

यूं भी चैत का महीना पहाड़ी जनजीवन में 'भिटौली' (भिटाना या visit करना) का महीना है. पहाड़ में विवाहिता बहनों को इस माह का बहुत शिद्दत से इंतजार रहता है और भाई बंधु भी बड़ी अकीदत से बहनों से मिलने उनके ससुराल जाते हैं. नाना किस्म के उपहार व विविध मिष्ठान लिए. पर्वतीय अंचलों में इन दिनों कफुवा पक्षी भी कुहुकने लगता है, कहा जाता है कफुवा के गान से बहनें बेटियां अपने जज़्बात जोड़ती हुई 'रितुरैंण' गीत गाती हैं

'रितु ऐगे रणमणी, रितु आगे रैंण
डाली में कफुवा बासो खेत फली दैण,
ईजु मेरी भाई भेजली भिटौली दिणा
रितु ऐगे रणमणी, रितु आगे रैंणा'....

एक मान्यता के अनुसार चैत्र मास में हिमालय से भगवान शिव स्वयं अपनी बहन भगवती से मिलने धरा पर आते हैं. सोर घाटी (पिथौरागढ़) में तो चैत माह के दोनों शुक्ल एवं कृष्ण पखवाड़े भर यहां चैतोल पर्व बहुत उल्लास से मनाया जाता है और देवडोला, घुनसेरा, विण, चैंसर, जाखनी तथा कुमौड़ गांव में देवलसमेत शिव मंदिरों में विशेष आरती अनुष्ठान योजित होते हैं.

ये उल्लास के फूल, ये कृपा के फूल वास्तव में बसंत के सबसे नायाब फूल हैं.

अप्रैल फूल यानी मूर्ख दिवस

प्रियदर्शी

थोड़ा पहले से ही कुछ बच्चे तो प्लान बनाने लगते हैं कि किसको और कैसे बनाया जाएगा अप्रैल फूल. कुछ लोगों को इसमें खासा मज़ा आता है. कुछ लोग अप्रैल फूल बनते हैं तो उन्हें बुरा भी लग जाता है. एक पुराना गाना भी तो है किसी हिंदी फिल्म का

'अप्रैल फूल बनाया तो उनको गुस्सा आया

मेरा क्या कुसूर, ज़माने का कुसूर जिसने दस्तूर बनाया'.

बात तो सही है 'मेरा क्या कुसूर' लेकिन क्या आपको पता है कि ये दस्तूर आखिर किसने बनाया? कैसे शुरू हो गया किसी को बुद्धू बनाने का ये सिलसिला?

चलो मैं बताता हूं. बात है सन 1381 की, यानि आज से 642 साल पहले की. उस समय के इंग्लैंड के राजा रिचर्ड द्वितीय और बोहेमिया की रानी एनी ने सगाई का ऐलान किया और कहा गया कि सगाई 32 मार्च 1381 को होगी.

इस ऐलान से आम जनता इतनी खुश हुई कि उसने खुशियां मनाना शुरू कर दिया. हालांकि बाद में उन्हें एहसास हुआ कि वह बेवकूफ बन गए हैं क्योंकि कैलेंडर में तो 32 मार्च की

तारीख ही नहीं होती. माना जाता है कि उसके बाद से ही हर साल एक अप्रैल को लोग मूर्ख दिवस के रूप में मनाने लगे.

कुछ लोग मानते हैं कि इसकी शुरूआत के पीछे सन 1582 में पॉप का निर्णय है यानी लगभग 441 साल पहले का. फ्रांस में 1582 में पोप चार्ल्स ने पुराने कैलेंडर की जगह नया रोमन कैलेंडर शुरू किया था. हालांकि इसके बाद भी कुछ लोग पुरानी तारीख पर ही नया साल मनाते रहे और उन लोगों को अप्रैल फूल्स कहा गया.

भारत में तो जब अंग्रेज़ आये तब ये चलन आया. ज़रूरी नहीं है कि आप इस दिन किसी को मूर्ख बनायें लेकिन अगर आपको करना ही है तो कुछ भी ऐसा न करें जिससे किसी का किसी भी तरह का कोई नुक्सान हो या उसे बुरा लगे. ■

इंसानी लापरवाहियों का खुला बयान है 'उदास नदियों का दर्द'

प्रीता व्यास

जलस्रोतों और पर्यावरण पर हज़ारों लेख लिख चुके पंकज चतुर्वेदी की इंडिया नेटबुक्स प्राइवेट लिमिटेड से हाल में प्रकाशित हुई है पुस्तक 'उदास नदियों का दर्द'. 375 रुपय क़ीमत की 164 पन्नों की इस पेपर बैक पुस्तक में गंगा, यमुना, गोमती, सोन, ब्रम्हपुत्र, क्षिप्रा,काबेरी, मरुगंगा सहित देश (भारत) भर की अनेक नदियों और उनकी सहायक नदियों की दुर्दशा का ऐसा खुलासा है कि जिसे पढ़ते हुए सदियों से चली आ रही पर्यावण के प्रति उपेक्षाओं और मनमानियों का नतीजा दिखाई देता है. जीवनदायिनी सदनीराओं का ये वो दर्द है जिसके हर पहलू का शायद एक आम इंसान को अंदाज़ा भी नहीं होता होगा.

नदियां सिर्फ जलधाराएं नहीं होतीं वे जीवनधाराएं होती हैं. लेखक ने उल्लेख किया है कि कभी हमारे पूर्वज इन्हीं जलधाराओं के किनारे किनारे भटकते जीवन की आस में यहां बस गए थे. उन्होंने यहां खेत बनाये, मवेशी पाले, गांव बसाया जिसके साथ गीतलोक समाज आया. आज वही जीवन बीज जलधारा जीवन क्षय का कारण है.

अगर हमने कभी अपनी नदियों के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा है, अगर उनका सूखना, मिटते जाना, रेत हटाए जाने से क्षरण होना, गंदगी से भरना, नाला बन कर रह जाना या उनके जल का विषैला होते जाना, उनमें पल रहे जलीय जंतुओं का काम होते हुए लुप्त होने की कगार तक जा पहुंचना, कुछ भी कभी भी हमारी चिंता का विषय नहीं रहा है तो अब सभी को इस ओर थोड़ा सोचने की आवश्यकता है. अब जाग जाने का समय है और ये पुस्तक जगाने का काम कर रही है.

इस पुस्तक में ऐसे बहुत से आंख खोलने वाले तथ्य शामिल हैं जिनके बारे में सामान्यत: व्यक्ति सोचता ही नहीं. हिमालय से निकलने वाली छ: हज़ार नदियों में से अब केवल चार सौ शेष हैं. क्या ये आंकड़ा चौंका नहीं ? जीवनदाई जल लाने वाली नदियों का जल इतना दूषित है कि पीने के योग्य ही नहीं बल्कि कहां कहीं तो

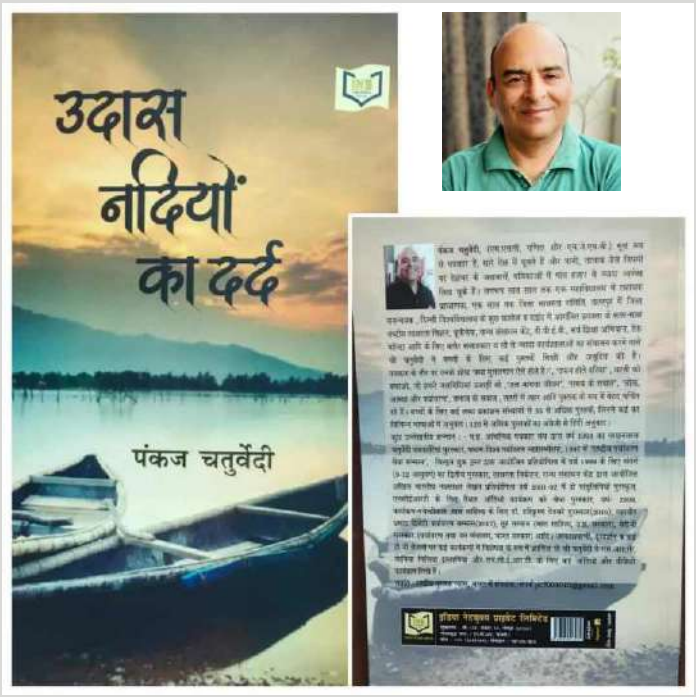

इसमें घुले विषैले रसायनों की वजह से ये कैंसर जैसी घातक बीमारियों को फैला रहा है. क्या इस बात से घबराहट नहीं होती ? जलचर मरते जा रहे हैं. गंगा में पाई जाने वाली 143 किस्म की मछलियों में से 29 से अधिक प्रजातियों के आगे अस्तित्व का संकट है. क्या ये चिंता का विषय नहीं ?

नदियों का संकट सिर्फ अंधाधुंध बजरी निकले जाने या बांध बांधने या कचरा, मूर्तियां,मैला, रसायन प्रवाहित करते जाने तक ही नहीं है बल्कि उससे कहीं गहरा और घातक है. सबसे गहरा संकट है कि हम अब भी जागे नहीं हैं. सफाई के नाम पर सरकारी योजनाएं बड़े बजट की बनती हैं लेकिन अंतर कहीं कुछ नज़र नहीं आता बल्कि रिवर फ्रंट जैसे चुनाव नदियों के जीवन के लिए और संकट उत्पन्न कर देते हैं.

इस पुस्तक में अनेक नदियों की स्थिति का चित्रण है जिसमें हमारी संस्कृति और आध्यात्मिकता की प्रतीक, भारत की सबसे बड़ी और दुनिया की पांचवी सबसे लंबी नदी मां गंगा भी शामिल है, उसकी बहन यमुना भी और अनेकों अन्य नदियां और उनकी सहायक नदियां भी. इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो आपको नदियों की कराह साफ़ सुनाई देगी. ■

Global Finance can show you how to save interest on your Business, Commercial or Home Loan.
"In money matters it's important to us, as we know it's important to you." We'd be proud to be a part of helping you reach your goals quicker.
Speak with one of our Trusted Financial Advisors at your local branch to learn how.
global finance
Airport Oaks 09 255 5500
Henderson 09 836 5555
Tauranga 07 577 0011
Manukau 09 263 5555
North Shore 09 255 5591
Disclaimer: T & C's apply and subject to normal lending criteria.

इस तिमाही का चित्र

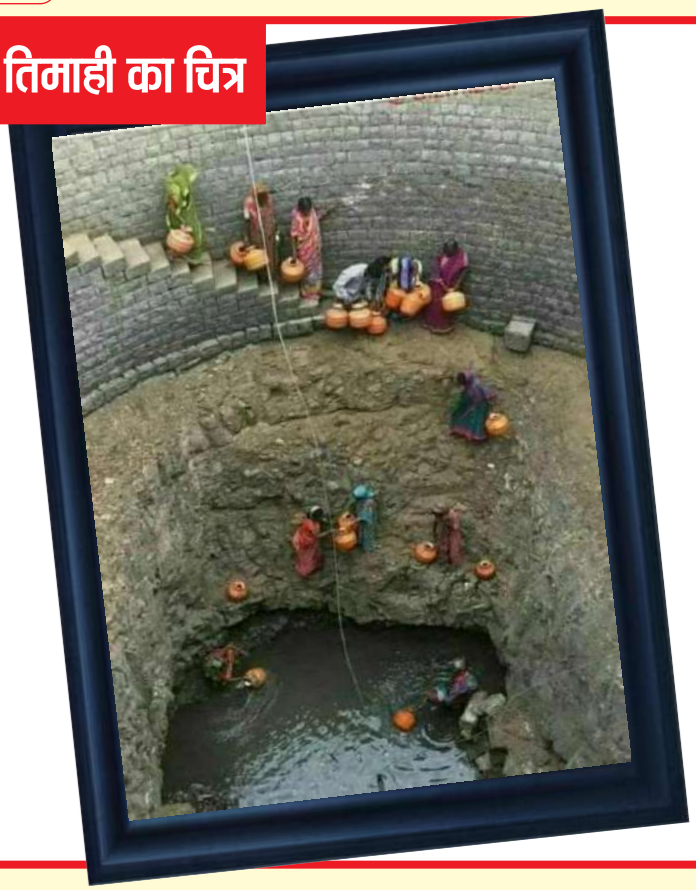

जयप्रकाश मानस

जयप्रकाश मानस स्थापित लेखक हैं. सृजन के संसार का जाना माना नाम हैं. जिस कुशलता से कलम चलते हैं उसी कुशलता से कैमरे को भी संभालते हैं. पिछले कई वर्षों से उनकी एक फोटो-सीरीज़ चल रही है 'अतुल्य भारत' नाम से. इस श्रृंखला में भारत के ग्राम्य परिवेश की सहज झलकियां शामिल हैं. यह चित्र इसी श्रृंखला से चयनित है.

पहचान
हिंदी त्रैमासिक
देश से हम, हमसे देश

अंतर्राष्ट्रीय, हिंदी त्रैमासिक ऑन लाइन पत्रिका 'पहचान' हेतु आप भी रचनाएं भेज सकते हैं.

आलेख, समीक्षा, साक्षात्कार, शोध परक लेख, व्यंग्य, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, लोक साहित्य, बाल साहित्य, कविता, गीत, कहानी, लघु कथा आस्था, धरोहर, इतिहास, कला, विज्ञान, स्वास्थ आदि साहित्य की सभी विधाओं में रचनाओं का स्वागत है.

रचनाएं वर्ड फ़ाइल में अपनी तस्वीर और परिचय सहित भेजें. लेख के लिए 800 से 1,000 और कहानी के लिए अधिकतम शब्द सीमा 1600 शब्द है.

यदि आप अपना खींचा कोई चित्र पत्रिका के कवर पेज या फिर तिमाही चित्र चयन के लिए विचारार्थ भेजना चाहें तो अपने परिचय के साथ चित्र के बारे में बताते हुए ई मेल कर सकते हैं.

संपादक मंडल का निर्णय अंतिम निर्णय होगा, इसमें विवाद की गुंजाईश नहीं होगी.

editor@pehachaan.com